सम्पादक की कलम से

शिक्षक दिवस पर विशेष

मानवता

मा- मानसिकता न-नवीन, व-वजूद, ता- ताकत, मानसिकता नवीन की ताकत अर्थात् मानसिकता को नवीन (नया) बनाने के की ताकत।

अशोक मानव

मानवता मानव की उस मानसिक अवस्था की खुशबू का नाम है जो किसी जीव पदार्थ के गुण का पहचान कर उसे विकासोन्मुखी बनायेगा। जिस प्रकार प्रकृति में सभी जीव पदार्थ में अपनी एक गुणात्मक खुशबू होती है, ठीक उसी प्रकार मानवता उस क्रिया का नाम है जिसमें वह दूसरे की पीड़ा को देखने के बाद उसकी पीड़ा को खत्म करने का उपाय खोजकर उसे खत्म करने में सहयोग करें। मानव की पीड़ा को देखने के बाद उसकी पीड़ा को खत्म करने का उपाय खोजकर उसे खत्म करने में सहयोग करें। मानव की मानसिकता से उत्पन्न होने वाली मानवता, प्रकृति उत्पत्ति का सर्वोपरि सजृन है। मानवता सिर्फ मानव के प्रति व्यक्त होने वाले व्यवहार को ही नही कहते है बल्कि समस्त जीव प्राणी के प्रति मानवीय व्यवहार को कहते है। मानव प्रकृति का वह प्राणी है जो अपनी मानवता से प्रकृति को और गुणात्मक बनाने के लिए दो गुणीये पदार्थों को मिलाकर तीसरे का सृजन करने में सहयोग कर सकता है। जिस प्रकार प्रकृति के अन्य जीव, पेड़-पौधे अपने गुण की सुगन्ध पुष्प या अपने स्वरूप से छोडतें है। ठीक उसी प्रकार मानव अपना गुण मानवता के रूप में छोड़ता है। अन्य जीव पेड-पौधे एक निश्चित सुगंध छोडते है। चाहे उन्हें किसी भी परेशानी से गुजरना पड़े पर अपने गुण की सुगन्ध छोड़ते है। पर मानव परेशानियों के कारण अपना स्वभाव बदल लेता है और नकारात्मक गुण की ऊर्जा छोड़ने लगता है। जो बिमारी का कारण बन जाती है। लेकिन उसकी यह क्षमता सकारात्मक बन जाती है। तो वहाँ अनेको प्रकार की सुगन्ध छोड़ सकता है। यही मानव की मानवता की सुगन्ध है। मानव में ही यह क्षमता है कि जैसी इच्छा बनाता है उसी प्रकार का भाव बनने लगता है और भाव शरीर को एहसास कराता है। जिसके बाद शरीर से उस गुण की सुगन्ध निकलने लगती है।

मानव के अन्दर की क्रिया में मन, मस्तिष्क, शरीर, इच्छा, भाव, मानवता की सुगन्ध बनाते है। मन प्रकाश पुंज है जो किसी भी विषय, घटना और पदार्थ को देखकर उसका संकेत मस्तिष्क को देता है और मस्तिष्क सही -गलत का फैसला करके इच्छा पैदा करता है। उस इच्छा पर मन का प्रकाश पड़ता है जिससे शरीर पर मन का प्रकाश पड़ता है। जो ईंधन का कार्य करता है। उसे जलाने की क्रिया मन रूपी प्रकाश से होती है। शरीर के पदार्थ के जलने से जो ऊर्जा बनती है उससे इच्छित विषय के लिए भाव बनाती है। जिसका एहसास शरीर करता है। इस एहसास के बाद नजर में उसकी सूक्ष्म आकृति बन जाती है जो मन रूपी प्रकाश के पड़ने के बाद आकृति रूपी प्रकाश बाहर निकल जाता है। जो पदार्थ के सहयोग से उस गुण की ऊर्जा (सुगन्ध) का निर्माण करता है। इसी प्रकार मानव से मानवता की सुगन्धा का निर्माण होता है। यह प्रक्रिया हर मानव से होती है। इसमें जाति ,धर्म, क्षेत्र और नश्ल का कोई भेद नही होता है। मानव सिर्फ मानव है जो मानवता की सुगन्ध के लिए आता है। मानव स्वयं प्रकृति की एक जाति है और इसका धर्म है जीव पदार्थ को पहचान कर उसके गुणों के विकास में सहयोग करना। क्षेत्र और नश्ल प्रकृति की जलवायु के करण बदलती है जो सभ्यता और संस्कृति में अन्तर करती है। जो प्राकृतिक आवश्यकता होती है। यह मानव की मानवता को नही बदलती । जाति, धर्म, क्षेत्र नश्ल यह मानव द्वारा बनायी गयी व्यवस्था है । प्राकृतिक नही है । मानव का यह विभेदीकरण मानवता को दूषित कर रहा है। जिसकी लड़ाई में मानव अपनी मानवता की सुगन्ध नही छोड़ पा रहा है और प्रकृति द्वारा प्राप्त अपनी जिम्मेदारी निभाने की जगह नकारात्मक ऊर्जा छोड़कर अप्राकृतिक होता जा रहा है। प्रकृति अप्राकृतिक ऊर्जा खत्म करने के लिए जीव का निर्माण करती है। विवेकवान प्राणी होने के नाते इसकी सबसे अधिक जिम्मेदारी मानव को प्राकृतिक निर्माण में लग जाना चाहिये। क्योंकि इसी प्रकृति में उसे बार-बार जन्म लेना है इस लिये अपने द्वारा छोड़ी गयी नकारात्मक ऊर्जा से बार-बार उसे लड़ना पड़ेगा। नकारात्मक ऊर्जा ही पीड़ा का कारण बनती है इसलिए अगला जीवन पीड़ा मुक्त हो इसके लिये आज से ही मानवता की सुगन्ध छोड़ने से प्रकृति समाज के साथ व्यक्तिगत लाभ मिलता है । व्यक्ति जैसा सोचता है उसी गुण का पदार्थ शरीर में बनता है। जब व्यक्ति मानवता की सुगन्ध छोड़ता है तो उसके शरीर में बनने वाला पदार्थ सकारात्मक हो जाता है। जिसमें नकारात्मक ऊर्जा पनप नही पाती है उसे जीवित रहने की खुराक वहाँ नही मिल पाती है जिसके कारण नकारात्मक जीवाणु नही पैदा हो पाते है। उसका शरीर निरोगित रहने लगता है । व्यक्ति बिमारी से बच जाता है । नकारात्मक ऊर्जा को शरीर से बाहर निकलना पड़ता है मानवता की सुगन्ध से खुद को महकाये इसी से समाज का प्रदूषण खत्म होगा। और प्रकृति सुगन्धित हो जायेगी।

मानवता को जगाने में ज्ञान की शिक्षा का विशेष योगदान होता है, जो शिक्षक गुरू देते है उन्हे आदर सम्मान की नजर से देखना चाहिये। ऐसा करने से उनकी भावनात्मक सुगन्ध प्राप्त होती है जो ज्ञान को धारण करने में सहायक होती है। शिक्षक दिवस के शुभ अवसर पर आप सब को हार्दिक बधाई और शिक्षक गुरूओं को सादर प्रणाम के साथ संपादक। □